RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मुगलकालीन चित्रकला की विवेचना

Sonu Kumari

Extension Lecturer in History Govt. College Bhaund Kalan (Charkhi Dadri)

1526 ई० में बाबर ने सल्तनतकाल का अंत करके मुगल वंश की नीव रखी। मुगल वंश अपने भव्य प्रशासन , सुलह एकुल की नीति सम्राज्य विस्तार एवं कलाओं के विकास के लिए इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। अकबर के समय संगीत, जहाँगीर के समय चित्रकला एवं शाहजंहा के काल में वास्तु ने अपने चरम को छुआ।

बाबर का समय

बाबर अपने अल्पकालिन शासनकाल में चित्र कला कि तरफ विशेष ध्यान नही दें पाया था। परन्तु अपनी आत्मकथा 'तुजके-बाबरी' में बिहजाद नामक चित्रकार का वर्णन किया । उसे पूर्व का राफेल कहा जाता था।

हुमायूँ कालीन चित्रकला

चित्रकला के विकास में हुमायूँ का योगदान अहम है। 1540 ई० में जब हुमायूँ बेलगाँव के युद्ध से भाग रहा था तो उसके राजदरबारी एवं घरेलू नौकरों में एक चित्रकार भी था। अपने निर्वासन काल में वह ईरान में मीर सैय्यद आली व ख्वाजा अब्दुस्समद से मिला। 1555-56 ई० में हुमायूँ की ताजपोशी के बाद हुमायूँ ने दोनों चित्रकारों को अपने दरवार में बुला लिया। दोनों चित्रकारों ने 'दास्तान-ए-अमीर-हमजा' को चित्रित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हुमायूँ एवं अकबर दोनों ने ही अब्दुस्समद को 'शिरी कलम' की उपलधि से नवाजा ।

अकबर कालीन चित्रकला

मुगल चित्रकला शैली का वास्तविक विकास अकबर के काल मे हुआ सल्लतनत कालीन शासकों ने चित्रकला को विशेष संरक्षण नहीं दिया बल्कि चित्रकला को प्रतिबंधित किया गया है। परंतु अकबर कला का पारखी था। उसने चित्रकला को प्रोत्साहित करने के लिए एक अलग विभाग की स्थापना की। इसका नाम 'तस्वीरखाना' था। ख्वाजा अब्दुस्समद को इस विभाग का अध्यक्ष बनाया गया । हुमायूँ एवं अकबर दोनों ने ही अब्दुस्समद को 'शिरी कलम' की उपलधि से नवाजा । अबुल फजल अपनी रचना आईना -ए- अकबरी में 100 से अधिक चित्रकारों का वर्णन करता है। अकबर के दरबार में हिन्दू व मुस्लिम दोनों का सम्मान किया जाता था। इसी कारण जहां अकबर कालीन चित्रकला के आरम्भ में ईरानी व विदेशी प्रभाव दिखाई देता है व बाद की चित्रकला में भारतीय व राजस्थानी प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात अमीर हमजा को चित्रित करने का कार्य अकबर के काल में ही पूरा हुआ। बंदायुनी एवं शाहनबाज खाँ बताते है कि इस संग्रह के चित्रण का कार्य अकबर कि प्ररेणा से हुआ।इसको पूरा करने में 15 वर्ष का समय लगा जबकी मुल्ला अलाउददौला काजविनी इस कृति को 'हुमायूँ के मस्तिष्क' कि उपज मानते है। इसमें 1200 उच्चतम कोटी के चित्र शामिल है। सभी चित्र चटकीले रंगों में कपड़ों पर बनाए गए है। दुर्भाग्य से इस कृति का छोटा सा ही अंश उपलब्ध है। जो वियना के औधोगिक कला संग्रहालय में तथा लंदन के विक्टोरिया और अलबर्ट संग्रहालय में संगृहीत है। सभी चित्र भाव प्रधान एवं तकनीकी कौशल के लिए विषय पर विलक्षण पकड़ दिखाई देती है। रंग योजना दमक वाली है व लाल ,नीले, पीले काले व हरे रंगो का प्रयोग विदेशी पेड़ पौधे स्थापत्य अलकरण कि बारीकियाँ आदि बेजोड़ है।

दसवंत कि चित्रकारी भी नायाब थी । वह सबसे प्रसिद्ध हिन्दू चित्रकार था। तवारिक-ए- तैमूरिया को चित्रित करने का कार्य द्सवंत ने किया। रज्मनामा के अधिकतर चित्र भी उसी के द्वारा बनाए गए थे। दसवंत के अतिरिक्त बसवान, सांवलदास, ताराचंद, केशव दास , हरिवंश व जगन्नाथ प्रमुख हिन्दू चित्रकार थे। स्वय अकबर ने हिन्दू चित्रकारों कि प्रंशसा करते हुए है कहा कि अनेक चित्र हम सब की कल्पना से परे है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

'शीरी कलम ' अब्दुस्समद के अतिरिक्त मीर सैय्यद अली , फारुख बेग एवं जमशेद भी प्रसिद्ध मुस्लिम चित्रकार थे।

अन्य प्रमुख चित्रत कृतियाँ :- अकबर के शासनकाल में चित्रांकित अन्य प्रमुख ग्रंथो में आशिका , अनवरे सुहाइली, बाबरनामा, अकबरनामा, तैमुरनामा, बहरिस्तान, तारीखें, अलफ़ों , खम्सा , रामायण , महाभारत , आदि शामिल है।

इसके अतिरिक्त अकबर ने फतेहपुर सीकरी के महलों में भित्ति चित्र भी बनवाने का आदेश दिया । कुछ स्वतन्त्र चित्र भी बनाए गए जो विशिष्ट एवं दरवार की घटनाओं पर आधारित थे।

जहाँगीर कालीन चित्रकला :- जहाँगीर का शासनकाल मुगलकालीन चित्रकला का स्वर्णकाल कहा जाता है। जहाँगीर ने बादशाह बनने से पूर्व ही आका रिजा चित्रकार के नेतृत्व में आगरा शहर में एक तस्वीर-शाला खुलवाई जिससे मुगल चित्रकला की शैली में तेजी से बदलाव आया। इससे पहले चित्रकारी हस्तलिखित ग्रन्थों की विषय वस्तु से संबंध होती थी। जहाँगीर की रुचि छाया चित्रों में थी। जहाँगीर ने शाही परिवार के सदस्यों के दरवार के उच्च अधिकार्यों के धर्म, साहित्य, संगीत कला आदि विषय-क्षेत्रों से संबन्धित महत्वपूर्ण व्यक्तियों के छवि चित्र बनवाने शुरू कर दिए। जहाँगीर के समय की चित्रकला में पूर्ण रूप से भारतीय तत्व शामिल थे। एवं जो कल्पना की बजाए यथार्थ पर आधारित है। चित्रकला का मुख्य विषय प्रकृति सौन्दर्य था। उस समय वृक्ष, फूल पत्तियों , पशु-पक्षियों , घटनाओं पर आधारित चित्र बनाऐ गए। रंगों में सोने चाँदी का प्रयोग किया गया। हल्दी के मिश्रण से सुन्दर रंग बनाए जाते थे। जहाँगीर के समय अब्दुल हसन एवं उस्ताद मंसूर सर्वाधिक लोकप्रिय चित्रकार थे। जहाँगीर ने अब्दुल हसन को 'नादिर-उज-जमा' तथा मसूर को नादिर-उस-असर की उपलब्धि से अलंकृत किया अब्दुल हसन लधु चित्र बनाने में दक्ष था जबकी मसूर पक्षियों के चित्र बनाने में माहिर था। उसके द्वारा बनाया गया बाज का चित्र चित्रकला में विशेष स्थान रखता है । उनके अतिरिक्त बिशनदास सर्वाधिक प्रसिद्ध हिन्दू चित्रकार था। 1613 ई० में जहाँगीर ने बिशनदास को फारस के शाह के दरबार के चित्र बनाने के लिए भेजा। वह चित्र बनाने में इतना दक्ष था। कि वह हूबहू चित्र बना देता था। जहाँगीर के दरबार में कालीन अन्य प्रसिद्ध एवं प्रमुख चित्रकार मुहम्मद नादिर , महम्मद मुराद , फारुख बेग , मनोहर माधव तुलसी एवं गोवर्धन है।

चित्रकला का कुशल पारखी

जहाँगीर चित्रकला का इतना पारखी था कि उनसे अपने आत्मकथा तुजुक-ऐ-जहाँगीर में लिखा है कला में मेरी रुचि व ज्ञान इस सीमा तक पहुँच गया है कि यदि मेरे सम्मुख ऐसी कृतियाँ लाई जाए जिसमें विभिन्न कलाकारों के द्वारा बनाई गई हों तो मै यह बता सकता हूँ कि अमुक आकृति किस चित्रकार ने बनाई है। यदि एक चित्रकार ने चेहरा बनाया हो और उस चेहरे में आखें व भौंहे किसी अन्य चित्रकार ने बनाई हो तो मै यह बता सकता हूँ अमुक चित्रकार ने मूल चेहरा तथा अमूक चित्रकार ने आँखें व भौंह बनायी है।

शाहजंहा कालीन चित्रकला

शाहजंहा की रुचि चित्रकला की उपेक्षा भवन निर्माण में ज्यादा थी। उसके समय में प्रसिद्ध चित्रकार मीर हाशिम, मुहम्मद नादिर , फकीर उल्लाह , अनूप व कल्याण दस थे। शाहजंहा ने पादशा हनामा, गुलिस्ता एवं बोस्ता ग्रंथो को चित्रित करवाया था।

शाहजंहा के पुत्र दाराशिकोह को चित्रकारी से विशेष प्रेम था परन्तु उसकी मृत्यु के साथ ही मुगल दरबार से चित्रकारी का दौर भी खत्म हो गया। चित्रकारी का भविष्य भी अन्धकारमय हो गया । शाहजंहा काल में चित्रों में चट-किले रंगों का प्रयोग किया गया है । इसके अतिरिक्त 'स्याह चित्र' का भी उल्लेख मिलता है जिन्हे केवल काली रेखाओं की मदद से बनाया जाता था।

औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था । वह चित्रकला को इस्लाम विरोधी समझता था। उसने दरबार में बने चित्रों पर सफेदी पुतवा दी । उसके समय चित्रकला मृत प्राय: हो गई। दरबार के अनेक चित्रकारों ने अन्य स्थानीय शासकों के दरबार में शरण ली । इसी कराण कई -नई शैलियाँ उत्पन्न हुई , जिनमें कांगड़ा शैली, दक्षिण कला, शैली, राजपूत शैली आदि प्रमुख हे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

1. हरिश्चन्द्र वर्मा : मध्यकालीन भारत , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
2. डॉ यशवीर सिंह , श्रीमती पुष्पा रानी , अनिल यादव: भारत का इतिहास, लक्ष्मी पब्लिकेशन, भिवानी
3. डॉ आर. जे. स्वामी, डॉ रामेश्वर दास, डॉ महेन्द्र सिंह: भारत का इतिहास जे. बी. डी पब्लिकेशन , इब्राहिम मंडी, करनाल
4. आर. पी. तिवारी : भारतीय चित्रकला तथा उसके मूल तत्व वाराणसी भारतीय पब्लिशिंग हाउस :, 1976

RRIJM 2015, All Rights Reserved